तद्धितप्रत्यय

तद्धित प्रत्यय मुख्यरूप से 14 प्रकार के होते हैं

अपत्यार्थक (सन्तानार्थ)	देवतार्थक प्रत्यय
अण्, अञ्, ढक्, यञ्, फक्, घ, यत्, ण्य	अण् ढक्
पढने या जानने अर्थ में	**समूहार्थक प्रत्यय**
अण् ढक	अण् तल्
इसका है क्या इस अर्थ में	**होनेवाले भावार्थक**
मतुप्, इनि, विनि	अण्,य,खञ्,घ,ठञ्,ढक्
विकारार्थक प्रत्यय	**भाववाचक प्रत्यय**
अण् यत्	त्व,तल्,अण्,इमनिच्,ष्यञ्
तुलनार्थकप्रत्यय	**अत्यन्तबोधक**
तरप् इयसुन्	(वियोगवाचक) तमप् इष्ठन्
पञ्चम्यर्थक प्रत्यय	**सप्तम्यर्थक प्रत्यय**
तसिल् तसि	त्रल्, ह, अत्, दा, हिल्, दानीम्, अधुना
प्रकारवाचक प्रत्यय	**पूरणप्रत्यय**
थाल्, थमु	उट्, मट्, तीय, थुक्, तमट्

निर्माणम्- प्रो. मदनमोहनझा, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, श्रीरणवीरपरिसरः, जम्मू

तद्धितप्रत्यय

प्रो.मदनमोहनझा

जो प्रत्यय धातुओं को छोडकर अन्य सभी शब्दों यथा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जोडा जाता हो।

प्रयोग के दृष्टि से तद्धित प्रत्यय के 8 प्रकार

मतुप् प्रत्यय	वतुप् प्रत्यय	तरप् प्रत्यय
तल् प्रत्यय	प्रयोग के दृष्टि से तद्धितप्रत्यय के आठ भेद	तमप् प्रत्यय
ताप् प्रत्यय	ङीष/ङीप् प्रत्यय	मयट् प्रत्यय

तद्धितप्रत्यय

प्रो.मदनमोहनझा

मतुप् प्रत्यय- इस प्रत्यय के प्रयोग के बाद शब्दों के अन्त में पुल्लिंग में- मान्/वान्, स्त्रीलिंग में- मती/वती तथा क्लिवलिंग में- मत्/वत् शेष रहता है।

शब्द	प्रत्यय	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
रूप	मतुप्	रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
बुद्धि	मतुप्	बुद्धिमान्	बुद्धिमती	बुद्धिमत्
श्री	मतुप्	श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत्
रस	मतुप्	रसवान्	रसवती	रसवत्
यशस्	मतुप्	यशस्वान्	यशस्वती	यशस्वत्

वतुप् प्रत्यय- इसका प्रयोग भी मतुप् प्रत्यय के जैसा होता है। यह अधिकतर अकारान्त शब्दों के साथ होता है।
इसमें केवल वत् शेष रहता है।

शब्द	प्रत्यय	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
धन	वतुप्	धनवान्	धनवती	धनवत्
बल	वतुप्	बलवान्	बलवती	बलवत्
गुण	वतुप्	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्

तद्धितप्रत्यय

प्रो.मदनमोहनझा

तरप् प्रत्यय- इस प्रत्यय का प्रयोग विशेषण के अन्त में उसे उत्तरावस्था में बदलने केलिए होता है। इसके लगने पर अन्त में तरः शेष रहता है।

शब्द	उच्च	श्रेष्ठ	सुन्दर	गुरु
प्रत्यय	तरप्	तरप्	तरप्	तरप्
प्रत्यययुक्त शब्द	उच्चतरः	श्रेष्ठतरः	सुन्दरतरः	गुरुतरः

तमप् प्रत्यय- इसका प्रयोग भी विशेषण के अन्त में उसे उत्तमावस्था में परिवर्तित करने केलिए किया जाता है। इसको लगाने पर अन्त में तमः शेष रहता है।

शब्द	उच्च	श्रेष्ठ	सुन्दर	गुरु
प्रत्यय	तमप्	तमप्	तमप्	तमप्
प्रत्यययुक्त शब्द	उच्चतमः	श्रेष्ठतमः	सुन्दरतमः	गुरुतमः

मयट् प्रत्यय-इसका प्रयोगसंज्ञा को विशेषण बनाने केलिए किया जाता है। इसके अन्त में मयः शेष रहता है।

शब्द	सुख	आम्र	स्वर्ण	दुख
प्रत्यय	मयट्	मयट्	मयट्	मयट्
प्रत्यययुक्त	सुखमयः	आम्रमयः	स्वर्णमयः	दुखमयः

तद्धितप्रत्यय

प्रो.मदनमोहनझा

मयट् प्रत्यय-इसका प्रयोग संज्ञा को विशेषण बनाने केलिए किया जाता है। इसके अन्त में मयः शेष रहता है।

शब्द	आनन्द	तेज	वाच
प्रत्यय	मयट्	मयट्	मयट्
प्रत्ययुक्त	आनन्दमयः	तेजोमयः	वाङ्मयः

तल् प्रत्यय- इसका प्रयोग सामान्यतः विशेषण से भाववाचक संज्ञा वनाने के लिए किया जाता है। इसके अन्त में ता शेष रहता है।

शब्द	लघु	मूर्ख	मित्र	विचित्र	पशु
प्रत्यय	तल्	तल्	तल्	तल्	तल्
प्रत्ययुक्त	लधुता	मूर्खता	मित्रता	विचित्रता	पशुता

ताप् प्रत्यय- इसका प्रयोग अकारान्त पुल्लिंग को अकारान्त स्त्रीलिंग बनाने केलिए किया जाता है। इसके अन्त में आ शेष रहता है।

शब्द	बाल्	अश्व	अज्
प्रत्यय	ताप्	ताप्	ताप्
प्रत्ययुक्त	बाला	अश्वा	अजा

निर्माणम्- प्रो. मदनमोहनझा, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, श्रीरणवीरपरिसरः, जम्मू

तद्धितप्रत्यय

ङीष् / ङीप् प्रत्यय-इसका प्रयोग अकारान्त पुल्लिंग शब्दों को ईकारान्त स्त्रीलिंग बनाने केलिए किया जाता है। इसके अन्त ई शेष रहता है।

शब्द	पुत्र	नर्त्तक	गौर
प्रत्यय	ङीप्/ङीष्	ङीप्/ङीष्	ङीप्/ङीष्
प्रत्यययुक्त	पुत्री	नर्त्तकी	गौरी

स्त्रीप्रत्यय

स्त्री प्रत्यय के भेद

टाप्	डाप्	चाप्	आनी
ङीप्	ङीष्	ङीन्	ति

टाप् प्रत्यय-इसका प्रयोग होने के वाद इसके अन्त में शीर्फ आ शेष रहता है। इसका प्रयोग अजादिगण के अजन्त या अदन्त शब्दों के साथ होता है

शब्द	अज	कोकिल	याचक	बालक
प्रत्यय	टाप्	टाप्	टाप्	टाप्
प्रत्यययुक्त	अजा	कोकिला	याचिका	बालिका

डाप् प्रत्यय-इसमें शीर्फ आ शेष रहता है। इसका प्रयोग मनन्त तथा अनन्त शब्दों के साथ होता है।

जैसे—सीमन् डाप् - सीमा

निर्माणम्- प्रो. मदनमोहनझा, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, श्रीरणवीरपरिसरः, जम्मू

स्त्रीप्रत्यय

प्रो.मदनमोहनझा

चाप् प्रत्यय- इसमें शीर्फ आ शेष रहता है। इसका प्रयोग सूर्य शब्द के देवतार्थ में होता है।

जैसे—सूर्य चाप् - सूर्या

ङीप् प्रत्यय- इसका प्रयोग ऋअन्त तथा न् अन्त वाले शब्दों के साथ होता है। ऋ का अर् होजाता है तथा न् वैसे ही रहता है। बनाने के लिए किया जाता है। इसके अन्त ई शेष रहता है।

कर्तृ-ङीप्	कर्त्री	दातृ-ङीप्	दात्री
धनी- ङीप्	धनिनी	राजन्- ङीप्	राज्ञी

ङीष् प्रत्यय- इसका प्रयोग षित् तथा गौर शब्दों के साथ होता है। इसके अन्त ई शेष रहता है। जैस

नर्तक-ङीष् नर्तकी, गौर-ङीष् गौरी, मंगल-ङीष् मंगली

ङीन् प्रत्यय- इसका प्रयोग नृ तथा नर शब्दों के साथ होता है। इसमें मात्र ई शेष रहता है। जैस

नृ-ङीन् नारी, नर-ङीन् नारी

ति प्रत्यय- युवन् शब्द के स्त्रीलिंग में ति प्रत्यय होता है। और ति लगने पर न् का लोप हो जाता है। जैस

युवन् - ति युवतिः (युवती)

आनी प्रत्यय- इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रूद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल, तथा आचार्य शब्दों में ङीष् प्रत्यय होता है तथा मध्य में आनुक् का आगम होता है। आनुक् में उक् का लोप हो जाता है। ङीष् का भी मात्र ई शेष रहता है। जैसे-

इन्द्र	आनुक्	ङीष्	इन्द्राणी
हिम	आनुक्	ङीष्	हिमानी
यव	आनुक्	ङीष्	यवानी
यवन	आनुक्	ङीष्	यवनी
मातुल	आनुक्	ङीष्	मातुलानी
आचार्य	आनुक्	ङीष्	आचार्याणी
क्षत्रिय	आनुक्	ङीष्	क्षत्रियाणी
रूद्र	आनुक्	ङीष्	रुद्राणी
भव	आनुक्	ङीष्	भवानी

निर्माणम्- प्रो. मदनमोहनझा, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, श्रीरणवीरपरिसरः, जम्मू